Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

इतिहास को वस्तुनिष्ठ बनाने मे आने वाली समस्याओं का अध्ययन

Narender Kumar*

MA History, NET

शोध सारः वस्तुनिष्ठता इतिहास की वाणी है। इतिहास में व्यक्तित्व के स्थान पर तथ्य पर अधिक बल दिया जाता है। वस्तुतः तथ्य को प्रमुखता प्रदान करके हम ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता की रक्षा कर सकते हैं। ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता सिदान्त की अपेक्षा अभ्यास द्वारा स्थगित की जा सकती है। वे इतिहासकार निन्दा के पात्र हैं जो तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करते हैं अथवा व्यक्तिगत भावना को महत्त्व प्रदान करते हैं। इतिहासकार को वस्तुनिष्ठता को त्यागकर अपनी व्यक्तिगत रुचि के अनुसार वर्णन नहीं करना चाहिए। इतिहासकार का निष्पक्ष एवं स्वतंत्र दृष्टिकोण उसे एक तथ्य से दूसरे की ओर ले जाता है। इसलिए इतिहासकार को तथ्यों वेफ चयन की आवश्यकता नहीं होती। तथ्य स्वयं एक-दूसरे का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इतिहासकार को केवल यह चाहिए होता है कि वस्तुनिष्ठता का निर्वाह करते हुए तथ्यों को सम्मान प्रदान करे। इतिहासकारों के सामने यह समस्या आती है कि ऐतिहासिक वर्णन करते समय वे निष्पक्ष बने रहे। इस शोध-पत्र में इतिहास को वस्तुनिष्ठ बनाने मे आने वाली समस्याओं का अध्ययन पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्दः वस्तुनिष्ठता, निष्पक्ष एवं स्वतंत्र दृष्टिकोण, व्यक्तिगत रुचि और भावना।

----------X----------

ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता की समस्याएँ अत्यन्त जटिल हैं। वैज्ञानिक इतिहासकारों के प्रयासों से इन समस्याओं के हल के बाद ही ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता को मान्यता प्रदान की जा सकती है। वर्तमान समय में ऐतिहासिक वस्तुपरकता की आवश्यकता पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है, ताकि इतिहास के अध्ययन को वैज्ञानिक रूप प्रदान किया जा सके। वस्तुनिष्ठता के अभाव में उसको वैज्ञानिक स्वरूप में मान्यता नहीं दी जा सकती। इतिहास में वस्तुनिष्ठता के समावेश से पहले यह आवश्यक है कि हम सामान्य इतिहास और शोध इतिहास के मध्य अन्तर को जान लें। सामान्य इतिहास संक्षिप्त होने के कारण वस्तुनिष्ठ हो सकता है परन्तु शोध इतिहास में विस्तृत होने वेफ कारण वस्तुपरकता नहीं पायी जाती है। प्रथम में इतिहासकार अपनी व्यक्तिगत भावनाओं का प्रयोग नहीं कर सकता जबकि शोध इतिहास में विद्वान लेखक तथ्य को चयनित करवेफ उसमें अपनी व्यक्तिगत रुचि और भावना के अनुवूफल व्याख्या करने में सक्षम होता है। वस्तुनिष्ठता की समस्या की जटिलताओं वेफ बाद भी इतिहासकारों ने उसवेफ वुफछ समाधान प्रस्तुत किये हैं। यह सत्य है कि ऐतिहासिक विवरण सर्वमान्य और सर्वकालिक नहीं होते और तथ्यों से प्रभावित होते हैं। उन पर इतिहासकार वेफ व्यक्तित्व की छाप स्वतः दृष्टिगोचर होती है।

निष्पक्षता का अभाव

डार्डेल का मत है कि कोई भी पदार्थ स्वयं वस्तुनिष्ठ नहीं होता अपितु उसमें वस्तुनिष्ठता को स्थापित किया जाता है। आधुनिक विद्वान बाह्य विधाओं से इतिहास को वस्तुनिष्ठ बनाना चाहते हैं जिसके कारण वस्तुनिष्ठता का प्रश्न विद्वान लेखकों और दार्शनिकों वेफ बीच विवाद का विषय बन गया है। अपने मत को स्थापित करने के लिए आधुनिक इतिहासकार अतीत का वर्णन किसी विशेष दृष्टिकोण, अवधारणा, संस्कार, व्यक्तिगत इर्ष्या, द्वेष अथवा भ्रान्ति वेफ सन्दर्भ में प्रस्तुत करता है जो कभी भी निष्पक्ष नहीं होता। इस पक्षपातपूर्ण वर्णन के कारण ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता को प्रमाणित करना विद्वानों के मध्य विवादास्पद बना हुआ है।

www.ignited.in

सामाजिक वातावरण का प्रभाव

कार्ल मार्क्स ने मनुष्य को संस्कारों में संलग्न एक सामाजिक प्राणी माना है। इतिहास का भी जन्म और विकास समाज परिवेश में होने के कारण उस पर भी धर्म और संस्कार का प्रभाव होता है। इतिहासकार भी इन प्रभावों से मुक्त नहीं होता इसलिए मार्क्स के अनुसार अरब-यहूदी, हिन्दू-मुस्लिम और रूसी-अमरीकी इतिहासकारों के वर्णन में परस्पर एकरूपता का अभाव है। अतः वैज्ञानिक विधा वेफ समर्थक इतिहासकारों को समाज के बाहर वस्तुनिष्ठता को ढूँढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

इतिहास में परिवर्तनशीलता

निःसन्देह इतिहास अतीत की घटनाओं का अध्ययन है जिसे अलग-अलग युग वेफ इतिहासकारों ने अपने-अपने ढंग से प्रस्तुत किया है। मैडलबाम की भी मान्यता है कि प्रत्येक पीढ़ी का इतिहासकार अपने युग की आवश्यकता वेफ अनुरूप इतिहास लिखता है। दास प्रथा को यदि किसी युग में वरदान लिखा गया है तो वर्तमान में उसे अभिशाप माना जाता है। अतः इतिहास में परिवर्तनशीलता के कारण वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता की कल्पना एक दुःस्वप्न है।

मान्यताओं में परिवर्तन

भूतकालीन कई प्रमाणिक मान्यताओं का वर्तमान में कोई महत्त्व नहीं रहा है। इसी प्रकार वर्तमान की प्रमाणित ऐतिहासिकता भी भविष्य में निरर्थक हो जायेगी जबकि वस्तुनिष्ठता में समय के साथ कोई परिवर्तन नहीं होता। अंकगणित के अनुसार सदैव 2 और 2-4 ही रहते हैं। अतः वस्तुपरकता सदैव सार्वभौम एवं सर्वकालिक होती है। वस्तुतः वैज्ञानिक वस्तुपरकता चुनौती से परे है जबकि ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता का स्वरूप सार्वभौमिक और सार्वकालिक नहीं होता है।

युग-युगीन आवश्यकता

जे. ए. राबिन्स का मत है कि इतिहासकार संकलित ऐतिहासिक साक्ष्यों एवं तथ्यों को अपने युग की परिस्थितियों और आवश्यकता के अनुसार प्रस्तुत करता है। एडवर्ड मेयर ने लिखा है कि, 'इतिहास लेखन में समसामायिक सामाजिक आवश्यकता की प्रधानता रहती है।' महान् दार्शनिक क्रोचे ने भी इतिहास को समसामायिक ही स्वीकार किया है और उनकी मान्यता है कि मानव की आत्मा अपने युग के प्रति संवेदनशील होनी चाहिए तभी वह इतिहास में समाज का सही चित्रा प्रस्तुत कर सकता है। पी. गार्डीनर ने भी यह उल्लेख किया है, एक ही ऐतिहासिक तथ्य की उपयोगिता और अनुपयोगिता विभिन्न युगों में बदलती रहती है। चूँकि मानव जीवन की रुचियाँ और निहित स्वार्थों का स्वरूप सदैव परिवर्तित होता रहा है इसलिए एक युग का इतिहास दूसरे से भिन्न पाया गया है। अतः ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता सिद करना सम्भव नहीं है।

व्यक्तिगत भावना का प्रभाव

बियर्ड ने लिखा है कि ऐतिहासिक तथ्यों के चयन में इतिहासकार का दृष्टिकोण व्यक्तिगत भावनाओं, सामाजिक वातावरण एवं परिस्थितियों से प्रभावित होता है। ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक है कि उसवेफ द्वारा ऐतिहासिक नियमों की अवहेलना हो जाये जिसके कारण उससे वस्तुपरकता की आशा करना उचित नहीं है। अधिकांशतः इतिहासकारों के ग्रन्थ व्यक्तिगत भावनाओं से प्रेरित होते हैं जिसवेफ कारण ऐतिहासिक तथ्य उपेक्षित हो जाते हैं और वस्तुनिष्ठता का प्रयास मृतप्रायः हो जाता है।

पूर्वग्रह की भावना

आकशाट की मान्यता है कि, इतिहासकार का पूर्वग्रह से ग्रसित होना स्वाभाविक है। प्रायः इतिहास में हम अतीत के पक्ष का अध्ययन करते हैं। जी. एम. ट्रेवेलियन ने इसी आधार पर यह उल्लेख किया है कि इतिहास में द्वेष और सहानुभूति का होना स्वाभाविक है। रुचि के अनुसार किया गया वर्णन वस्तुनिष्ठ न होकर विषयनिष्ठ होता है। वेबर का भी कथन है कि, इतिहास में वस्तुनिष्ठता को ढूँढ़ना एक दोष है।

चयनात्मक स्वरूप

वाल्श की मान्यता है कि 'इतिहास का स्वरूप चयनात्मक होता है। चूँकि इतिहासकार के लिए अतीत का सम्पूर्ण वर्णन करना सम्भव नहीं होता, अतः वह अपनी सामर्थ्य के अनुसार केवल उसके एक पक्ष का ही वर्णन प्रस्तुत करता है। अपने पूर्वग्रहों में फँसे होने के कारण इतिहासकार घटना को अपने-अपने ढंग से लिखता है। डॉ. ईश्वरी प्रसाद और डॉ. आगा मेंहदी हुसैन ने ग्यासुद्दीन तुगलक की मृत्यु के सम्बन्ध में परस्पर विरोधी मत व्यक्त किया। प्रथम सुल्तान की हत्या के लिए जूना खाँ (मोहम्मद तुगलक) को उत्तरदायी मानता है जबकि द्वितीय ने जूना खाँ की निर्दोषता को सिद करने के लिए प्राकृतिक आपदा को उत्तरदायी माना है। अतः स्पष्ट है कि इतिहासकार अपने मत के समर्थन में तथ्यों का चयन करता है। इस प्रकार की

www.ignited.in

प्रवृत्ति ऐतिहासिक वस्तुपरकता के मार्ग में बहुत बड़ी बाधा होती है।

भावों की प्रधानता

इतिहास लेखन र्तक प्रधान न होकर भाव प्रधान होता है। रेंवेफ ने लिखा है कि, 'इतिहास लेखन अन्तश्चेतना का विषय है।' जिसका भावप्रधान होना स्वाभाविक है। प्रसिद इतिहासकार गूच ने भी उल्लेख किया है कि हाड़-मांस के बने लेखक के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति उसके द्वारा लिखित पृष्ठों में होती है। जिसमें भावों की प्रधानता को पृथक् करके उसे वस्तुपरक बनाना सम्भव नहीं होगा। शिलर ने भी लिखा है कि ऐतिहासिक वस्तुपरकता एक जटिल समस्या है। हेनरी पिरेन ने भी लिखा है कि इतिहासकार चाहे कितना ही निष्पक्ष हो, पूरी तरह से वस्तुपरक नहीं हो सकता क्योंकि उसको लिखने वाला अपने ही हाड़-मांस के बने मानव से सम्बन्धित घटनाओं का वर्णन करता है।

धर्म व जाति की कठिनाइ

वस्तुपरकता की एक अन्य समस्या धर्म व जाति से सम्बन्धित है। इतिहासकार चाहते हुए भी अपने आपको धर्म और जाति की भावना से मुक्त नहीं कर पाता। मध्यकालीन इतिहासकारों ने धर्म और जाति के प्रभाव वेफ कारण ऐतिहासिक तथ्यों को मनमाने ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। एक ओर यदि सर यदुनाथ सरकार ने औरंगजेब की धर्मान्धता के कारण उसकी कटु आलोचना की है तो दूसरी ओर फारूखी ने औरंगजेब की इसी भावना के कारण उसकी अत्यधिक प्रशंसा भी की है। इसी प्रकार का तीव्र मतभेद हमें रोमन कैथोलिक, प्रोटेस्टेण्ट, यहूदी और अरब इतिहासकारों में भी देखने को मिलता है

अन्य समस्याएँ

एक इतिहासकार व पत्राकार के लिए वस्तुनिष्ठ होना सम्भव नहीं है। जी. गा£डनर ने भी स्पष्ट रूप से लिखा है, 'इतिहास का सम्पूर्ण स्वरूप कदाचित वस्तुपरक नहीं हो सकता। मैडलबाम ने भी उल्लेख किया है कि ऐतिहासिक न्याय मूल्यपरक होता है जिसके कारण उसे वस्तुनिष्ठ नहीं कहा जा सकता। सामाजिक मूल्य सदैव परिवर्तित होते हैं। वह जो वर्तमान काल में उपयोगी नहीं है आवश्यक नहीं कि अतीत काल में उसका कोई महत्व न रहा हो। परिवर्तनशील सामाजिक मूल्यों के प्रभाव से इतिहासकार अपने को मुक्त नहीं कर पाता। सभ्य समाज के मानव का विभिन्न राजनीतिक दलों से सम्बन्ध रहता है और इतिहासकार भी सामाजिक प्राणी होने के कारण राजनीतिक दलों की विचारधारा से प्रभावित होता है और अपने दृष्टिकोण के अनुसार ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या प्रस्तुत करता है। अतः इतिहासकार से वस्तुपरकता की अपेक्षा करना अनुचित है।

वाल्श ने भी लिखा है, इतिहासकार के लिए अपनी रचना में से व्यक्तिगत पूर्वग्रहों को निकालना उतना ही असम्भव है जितना उसका अपने आपको अपनी त्वचा से बाहर निकालना। वास्तव में वस्तुनिष्ठता से तात्पर्य मतैक्य से है न कि परस्पर विरोधी दृष्टिकोण का वर्णन। वस्तुनिष्ठ ज्ञान में उस समय तक मतान्तर नहीं होता जब तक कि वस्तु में परिवर्तन न हो। वस्तुनिष्ठ ज्ञान स्थान और समय के प्रभाव से मुक्त होता है। फिर भी वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता की भाँति ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता के विषय में कल्पना एक स्वप्न मात्र है। एक विद्वान इतिहासकार अपनी इच्छानुसार तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत नहीं करता है। उसकी व्यक्तिगत रुचि अथवा अलगाव, पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण व विभिन्न सिदान्त भी यह स्पष्ट रूप में इंगित करते हैं कि इतिहासकार का दृष्टिकोण वस्तुनिष्ठता से किस प्रकार सम्बन्ध बनाये रखता है। एक इतिहासकार के लिए निश्चित आचार संहिता का पालन करना भी अनिवार्य है। वास्तव में बौद्धिक निष्ठा वेफ अभाव में इतिहास अपने वास्तविक स्वरूप को खो देता है और एक उपन्यास अथवा काल्पनिक रचना बन जाती है। इतिहास वेफ नियम और अनुशासन सदैव इतिहासकार को वस्तुनिष्ठता की प्रेरणा प्रदान करते हैं और उसकी उपेक्षा करने वाले गिबन जैसे इतिहासकारों का महत्त्व धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

बंद्योपाध्याय, पलासी से विभाजन तकः आधुनिक भारत का इतिहास -ओरियंट ब्लैकस्वान।

विमल कुमार, कविता सैनी - भारतीय अर्थव्यवस्था का इतिहास गुलीबाबा पब्लिश हाउस प्राइवेट लिमिटेड।

मध्यकालीन भारत का इतिहास- डॉ. मानिक लाल गुप्त-, अटलांटिक पब्लिशर्स।

अनिता वर्मा-' शिक्षा और समाज- गुलीबाबा पब्लिश हाउस प्राइवेट लिमिटेड।

www.ignited.in

Corresponding Author

Narender Kumar*

MA History, NET

narenderkumar1234@gmail.com